सारांश पुस्तिका

हिंदी में राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारत की अर्थव्यवस्था में मात्स्यिकी का योगदान

11 जुलाई, 2019

भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान

मत्स्यपुरी पी.ओ., कोचिन

भारत की अर्थव्यवस्था में प्रग्रहण मात्स्यिकी और समुद्री संवर्धन का योगदान

पी. षिनोज

भाकृअनुप-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचिन

पी. षिनोज

भारत का समुद्र तट करीब 8118 कि.मी. का है, जिसमें 2.025 मिलियन वर्ग कि.मी. की अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ई ई इज़ेड) और अत्यंत समृद्ध एवं विभिन्न मात्स्यिकी संसाधन आधार का समर्थन करने वाले 0.53 मिलियन वर्ग कि.मी. का महाद्वीपीय शेल्फ क्षेत्र भी शामिल हैं। भारतीय आर्थिक क्षेत्र में मात्स्यिकी संसाधनों की संभावित प्राप्ति के पुनर्वेधीकरण की विशेषज्ञ समिति (2018) ने भारत की अनन्य आर्थिक क्षेत्र की संभावित प्राप्ति आकलन (पी वाइ ई) लगभग 5.31 मिलियन टन (मि.ट.) आंका गया है। इसमें, 1.2 मि.ट. मुख्य भूमि अनन्य आर्थिक क्षेत्र (0.97 मि.ट.) के 200-500 गहराई क्षेत्र के गहरा सागर संसाधन और महासागरीय क्षेत्र के संसाधन (0.23 मि.ट.) सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त यह रिपोर्ट महासागरीय स्क्विड (0.063 मि.ट.), माइक्टोफिड्स (1 मि.ट.), जेली फिश (0.2 मि.ट.) और समुद्री शैवाल (0.017 मि.ट.) जैसे गैरपारंपरिक संसाधनों के आकलन को भी दर्शाती है। अब भारत विश्व में प्रग्रहण मछली उत्पादक देशों में छठा सबसे बड़ा देश है, वर्ष 2017 में कुल समुद्री मछली अवतरण 3.83 मिलियन टन (मि.ट.) आकलित की गयी थी, जो पिछले वर्ष के दौरान 5.6 प्रतिशत अधिक रहा। वर्ष 1960 और 2017 के बीच इस सेक्टर की औसत वार्षिक वृद्धि दर 3.1 प्रतिशत थी। इसके अलावा, समुद्री जलजीव पालन (समुद्री संवर्धन) भारत में भविष्य के मछली उत्पादन का प्रमुख स्रोत बन रहा है। हाल के अध्ययन ने समुद्री संवर्धन द्वारा भारत के मछली उत्पादन शक्यता को 4.53 मि.ट. तक बढ़ने का आकलन किया है और यह अनुमान लगाया है कि अनुकूल क्षेत्र का एक प्रतिशत कम घनत्व वाले समुद्री पंखमछली जलजीव पालन के लिए विकसित किए गये है। लगभग 26 हजार गैरमोटर चालित पारंपरिक यानों, 96 हजार मोटर चालित यानों और 43 हजार से अधिक यंत्रीकृत यानों सहित विभिन्न बेड़ों का उपयोग करके समुद्री संसाधनों का विदोहन किया जा रहा है (समुद्री मात्स्यिकी जनगणना, 2016)। आजीविका का स्रोत होते हुए समुद्री मात्स्यिकी भारतीय उपमहाद्वीप के पूर्व तथा पश्चिम तटों पर स्थित 3827 मत्स्यन गाँवों में रहने वाले करीब 3.8 मिलियन लोगों को रोज़गार प्रदान करती है। समुद्री मात्स्यिकी जनगणना, 2016 के अनुसार तटीय मछुआरों का लगभग 40 प्रतिशत मत्स्यन तथा इससे जुड़ी हुई गतिविधियों में लगे हुए थे। इनमें से, करीब 60 प्रतिशत (0.93 मिलियन) सक्रिय मत्स्यन में लगे हुए हैं और बाकी मछली विपणन, जाल की मरम्मत, मछली सुखाने का काम, विशल्कन, मत्स्यन श्रम जैसे अनुबंधित कामों में लगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त बहुसंख्यक तटीय निवासी शंबु एवं शुक्ति पालन, पिंजरा मछली पालन, समुद्री शैवाल पैदावार, अलंकारी मछली पालन जैसे तटीय समुद्री संवर्धन कार्यविधियों में लगे हुए हैं। इसके अलावा यह सेक्टर समुद्री मछली और मछली उत्पादों को हिमीकरण या प्रसंस्करण करके विश्व के सभी महाद्वीपों में निर्यात करते हुए विदेशी मुद्रा कमाने में पर्याप्त योगदान करता है। इस तरह वर्ष 2016-17 के दौरान 37,870.90 करोड़ रुपए (US$ 5.78 बिलियन) का निर्यात किया गया, जिसमें, समुद्री मात्स्यिकी का योगदान परिमाण में 70 प्रतिशत और मूल्य में 40 प्रतिशत था।